# कोरोना काल में फिरोजिया ने सबसे ज्यादा की मदद

## सिटीजन इंगेजमेंट प्लेट फॉर्म के सर्वे में उज्जैन-आलोट सांसद देश में पहले नम्बर पर

उज्जैन » सिटी रिपोर्टर

**सिटीजन इंगेजमेंट प्लेट फॉर्म के द्वारा करवाए गए सर्वे में उज्जैन-आलोट सांसद अनिल फिरोजिया देश के पहले ऐसे जनप्रतिनिधि घोषित किए गए हैं, जिन्होंने कोरोना काल में सर्वाधिक रूप से आम लोगों की मदद की है।**

अनिल फिरोजिया, सांसद

# दिल्ली की संस्था का सर्वे, सांसदों में फिरोजिया अव्वल

## कोरोना काल में लोगों की मदद करने पर था सर्वेक्षण

### सांसद ने टीम को बताया था

# सांसद अनिल फिरोजिया

उज्जैन-आलोट संसदीय क्षेत्र

#Brillsense-07343552110

6, भक्त नगर, उज्जैन

8120003005

~ कोरोना काल मे संघर्ष

# एक प्रयास

# सांसद अनिल फिरोजिया

उज्जैन-आलोट संसदीय क्षेत्र

# प्रस्तावना

दुनिया में उपजे कोरोना संक्रमण कई विकसित देशों की अर्थव्यवस्था पूरी तरह तहस–नहस हो गई। कई देशों में लाशों के अम्बरो की भयावाह तस्वीरों ने मन को विचलित कर दिया।

मगर इन सबके बावजूद भारत में कोरोना की जंग को सामूहिक एकता के बूते पर लड़ा और अलग–अलग भाषा अलग अलग संस्कृति के रंगों के भेद के बावजूद 150 करोड़ के इस देश में सामूहिक एकता का प्रदर्शन इसलिए हुआ क्योंकि देश का नेतृत्व करने वाले देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व पर पूरे देश को भरोसा था।

लॉकडाउन के पहले दिन से लगातार अब तक माननीय प्रधानमंत्री जी की आशावादी सोच का ही परिणाम था कि इस संकट काल में माननीय प्रधानमंत्री जी ने जब भी देश की जनता से जो भी आवाहन किया लोगों ने उसे इस तरह के सहज भाव से स्वीकार किया मानो घर परिवार का कोई गार्जियन हमें कुछ करने को कह रहा है और हम उसे करते चले जा रहे हैं माननीय प्रधानमंत्री जी के इन निर्देशों का पालन पूरे देश में सामूहिकता से किया और विश्व बिरादरी को ना सिर्फ अपना आत्मविश्वास दिखाया बल्कि दुनिया को यह भी संदेश दिया कि दुनिया में भारत का नेतृत्व सर्वश्रेष्ठ है और इसी बदौलत हमारी सामूहिकता और एक दूसरे के प्रति हमारी संवेदना ओं को जागरूक किया और वसुदेव कुटुंबकम कि हमारी सोच को चरितार्थ किया।

कोरोना काल के शुरुआती समय में वास्तव में भारत सरकार ने जिस तरह का काम किया वह काबिले तारीफ है।

*"जब पूरी दुनिया डर कर घर में बंद थी उस समय भी भारत के लोग एक दूसरे की मदद कर मानवता की मिसाल को कायम करने का काम इसलिए कर पा रहे थे क्योंकि माननीय प्रधानमंत्री जी ने पूरे देश का मनोबल बड़ा रखा था।"*

अपने मुखिया प्रदेश की जनता का विश्वास इसी से समझा जा सकता है कि प्रधानमंत्री जी ने जब भी कोई आवाहन किया पूरे देश में ना उसे पूरे मनसे बल्कि पूरे आत्म भाव से उस काम को किया जिसका आवाहन प्रधानमंत्री जी ने किया।

मेरा उज्जैन आलोट संसदीय क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा।



# मेरा अहसास

देश में जब कोरोना की दस्तक और पहली मौत हुई उस वक्त लोकसभा चल रही थी और मैं दिल्ली में था। जनता कर्फ्यू के दिन जब मैं अपना लोकसभा क्षेत्र में पहुंचा तो मैंने अधिकारियों से बात कर इस महामारी से लड़ने के इंतजामों पर बातचीत की।

उज्जैन में देखते ही देखते हालात पूरी तरह खराब हो गए यहां मृत्यु दर 30 प्रतिशत चली गई मैंने माननीय प्रधानमंत्री जी व माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी से बातचीत पत्राचार कर जानकारी दी और जरूरी संसाधन और विशेषज्ञों की टीम भेजने का आग्रह किया टीम और संसाधन पहुंचने के बाद यहां हालातों पर काबू पाया गया।

लेकिन उसके बाद भी कई सारी चुनौतियां सीना ताने खड़े थे मसलन लोगों को राशन, खाना उपलब्ध करवाना, प्रवासियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाना, अन्य प्रांतों में फंसे लोगों को वापस लाना उनके लिए अन्य व्यवस्थाओं को जुटाना और इन सब से अधिक जरूरी यह था कि जो भी बीमारी की चपेट में आया है उसे समय पर उचित उपचार मिले उससे लगातार बातचीत कर उनसे पर्याप्त सामान उपचार की व्यवस्था करना नए लोग इस बीमारी की चपेट में ना आए इसलिए लोगों को जागरूक करने जैसे कई काम थे।

लेकिन माननीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से कोरोनाकाल मे हर मोर्चे पर मैंने और मेरी टीम ने एक एक विषय पर बारीक से बारीक प्रबंध करने का प्रयास किया और हम सफल भी हुए मैंने इस बुक में वर्णित सारे काम के लिए अलग अलग टीम का गठन किया और सभी की जिम्मेदारी तय करते हुए सभी को व्यवस्थाओं में लगा दिया रोज सुबह पूरी टीम से वर्चुअल मीटिंग के बाद दिन भर के टास्क को पूरा करने में हम जुट जाते थे।

मैं स्वयं पूरे समय मैदान में रहते हुए लोगों की सेवा करना शहर को सेनेटाइज करना व जरूरत पड़ने पर पूड़ियां बेलना और खाना बनाने के काम में भी लग जाता हमारे लगातार प्रयासों के बाद परिणाम सामने आने लगे संसदीय क्षेत्र के किसी भी कोने से किसी भी तरह के मदद के मैसेज मिलने के कुछ ही मिनटों में हमारी टीम हमारे कार्यकर्ता जरूरतमंद के पास मांगी गई सहायता लेकर पहुंच जाते।

ईश्वर ना करें ऐसा समय फिर कभी आए

*"माननीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से कोरोनाकाल मे हर मोर्चे पर मैंने और मेरी टीम ने एक एक विषय पर बारीक से बारीक प्रबंध करने का प्रयास किया और हम सफल भी हुए।"*

# विशेषज्ञो की टीम

"दुनिया में सर्वाधिक मृत्यु दर पर पहुंचा उज्जैन, केंद्र ने भेजी टीम तो स्थिति आई नियंत्रण में"

कोरोना संक्रमण के दस्तक के बाद शुरुआती दौर में उज्जैन के हालात हर दिन के साथ बिगड़ते जा रहे थे एक समय ऐसा भी आया जब उज्जैन में मृत्यु दर का आंकड़ा 30 प्रतिशत तक पहुंच गया था।

मामले को लेकर मैंने स्थानीय प्रशासन के साथ बैठक कर मृत्यु दर को कम करने वाले तमाम पहलुओं पर चर्चा विचार किया लेकिन तमाम प्रयासों व कई तरह के प्रयत्नों के बाद भी जब स्थिति सुधरती नहीं दिखी तो मैंने माननीय प्रधानमंत्री जी व माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी को पत्र लिखा माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी से फोन पर बात कर उन्हें इस भयावह स्थिति की जानकारी दें इस चर्चा के तत्काल बाद माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी ने कोरोना के विशेषज्ञों की एक टीम को उज्जैन रवाना किया। बेंगलुरु से आई इस टीम में चार विशेषज्ञ थे उन्होंने यहां पहुंच कर अस्पतालों व्यवस्थाओं व संसाधनों की बारिकी से जांच की और यह पता लगाया की वह कोरोना से लड़ने में उनका कैसे सही उपयोग करना है इस पर बात की जानकारी से स्थानीय चिकित्सक व अधिकारियों को अवगत कराया यह टीम यहां चार दिनों तक रही इसका लाभ यह हुआ कि इस टीम की ट्रेनिंग के बाद व्यवस्थाओं में तेजी से सुधार आया हमने जहां मृत्यु दर पर अंकुश लगाया वहीं मरीजों में रिकवरी भी तेजी से बढ़ी और हम एक बार फिर लोगों का विश्वास जीतने में भी सफल साबित हुए यह सब इसलिए संभव हो पाया क्योंकि केंद्र में एक गंभीर और जिम्मेदार सरकार नेतृत्व कर रही थी जिससे मेरी चिट्ठी को गंभीरता से लिया और मेरे एक आग्रह पर विशेषज्ञों की टीम भेजी और उज्जैन को राहत मिली।

# कॉल सेंटर

**"कॉल सेंटर के माध्यम से मरीजों से किया संपर्क जरूरी सामान उपलब्ध कराया।"**

कोरोना से पीड़ित लोगों में भय ज्यादा होता है जो ऐसे आम लोग हैं जिन्होंने अपने पूरे जीवन में अपने घर पर किसी एक खाकी धारी पुलिस जवान को नहीं देखा था, ऐसे लोगों के पॉजिटिव आने पर उनके घरों पर पुलिस प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग की लाल पीली बत्ती यों की गाड़ियां और अधिकारियों, पुलिस जवानों को देख आम आदमी बुरी तरह भयभीत हो जाता था। उसके बाद उसे स्वस्थ होने तक अकेले अस्पताल में रहना ऐसा जीवन इस बीमारी से भी अधिक खौफ पैदा कर देता है।

ऐसे सभी मरीजों को राहत देने उनका आत्मविश्वास जगाने और उन्हें जरूरत का सामान मुहैया करवाने के लिए हमने कॉल सेंटर बनाया।

**"जिले के तमाम अस्पतालों में भर्ती हुए कोरोनावायरस मरीजों से हम कॉल सेंटर के माध्यम से लगातार संपर्क में रहे हम इस दौरान मरीजों को हमारे नंबर भी उपलब्ध करवाते और उनसे कहते रहेकिसी भी तरह की असुविधा होने पर वह हमें इसकी जानकारी दें।"**

इसका लाभ यह हुआ कि मरीजों को खाने पीने या इलाज संबंधी कोई भी परेशानी कोई दिक्कत होती तो वह हमसे बात करते अपने परेशानियों को बताते। इसके बाद हमारी टीम संबंधित मरीज की परेशानियों को लेकर अस्पताल प्रबंधन से बातचीत कर मरीज की समस्या का समाधान करवा देने और उसके बाद फिर हमारे कॉल सेंटर में कॉल करके संबंधित मरीज से क्रॉस चेक कर इस बात को सुनिश्चित किया जाता है कि वाकई में उस मरीज की समस्या का समाधान हुआ या नहीं।

हमारे इस प्रयोग का बड़ा फायदा यह हुआ कि सभी अस्पताल व वहां की व्यवस्थाओं पर हमारी सीधी नजर बनी रही और अस्पताल में भर्ती मरीजों का आत्मविश्वास भी व्यवस्था और सरकार के प्रति बढ़ता गया।

# सेवा

# सहयोग

श्रीमन्त माधवराव सिंधिया

प्रकल्प

# रसद, राशन व भोजन व्यवस्था

कोरोना के कारण लगाए गए लॉकडाउन के चलते हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि पूरे संसदीय क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति भूखा ना रहे।

इसके लिए पूरे संसदीय क्षेत्र में अलग–अलग माध्यमों से जरूरतमंद लोगों तक कच्चे राशन के साथ ही भोजन पैकेट उपलब्ध करवाने का काम किया गया। अकेले उज्जैन में प्रतिदिन 5000 भोजन के पैकेट की उपलब्धता का जिम्मा खुद हमारी टीम ने उठाया था इसके अलावा इस काम में लगे अन्य संस्थाओं को आटा, दाल, चावल, तेल, गैस की टंकियों की उपलब्धता करवा कर इस पुनीत कार्य को पूरे लॉकडाउन के दौरान 1 दिन भी रुकने नहीं दिया।

“प्रतिदिन 5000 से अधिक भोजन के पैकेट की उपलब्धता का जिम्मा हमारी टीम ने उठाया”

इसके लिए भी मोहल्लो तक टीम ने काम किया और हर जरूरतमंद तक भोजन के पैकेट सही समय पर दोनों समय पर पहुंचाने का काम किया।

इस दौरान दो चार बार भोजन शाला में जब ऐसी स्थिति बनी कि खाना बनाने में लगने वाले कर्मचारी किसी कारण से नहीं पहुंचे तो हमारे कार्यकर्ता और उनके घरों की माता बहनों ने मोर्चा संभाला और भोजन व्यवस्था को सुचारु रखा। इस दौरान मैंने स्वयं ने भी कार्यकर्ताओं के साथ पुरिया बनाई और उन्हें तलने का कार्य किया।

# देश-विदेश

"देश दुनिया में फंसे
**17,000**
से अधिक लोगों को
उनके घरों तक पहुंचाया।"

लॉक डाउन लगते ही मानो दुनिया बंद की गई थी जो जहां था वहीं रुक गया था। इस तरह से देश–दुनिया में बसे 17000 से अधिक लोगों को उनके निवास व परिवार के बीच सुरक्षित रूप से पहुंचाने का काम किया गया।

खास बात यह है कि इन 17000 लोगों में से प्रवासी मजदूरों के अलावा सेना से सेवानिवृत्त हुए जवान इंटर स्टेट प्रोग्राम के तहत एक स्टेट से दूसरे स्टेट में पढ़ाई के लिए पहुंचे नवोदय विद्यालय के विद्यार्थी अन्य शहरों में रहकर व्यापार व्यवसाय करने वाले प्रोफेशनल, तीर्थयात्री और विदेशों में पढ़ाई के लिए गए एमबीबीएस के विद्यार्थियों का समूह शामिल है।

हरिभूमि
भोपाल - मालवा भूमि
Date - 27 Mar'20

10 यात्रियों का दल नाथद्वारा पैदल यात्रा के लिए गया था, कर्फ्यू के कारण वहीं फंस गए थे

बीते 2 दिन में 2 दर्जन से ज्यादा व्यक्तियों को किया रेस्क्यू

हरिभूमि

अगले दो दिनों में अब बिहार और झारखण्ड के मजदूरों को भेजेंगे

2 दिनों में 2 राज्यो के मजदूर पहुंचे अपने घर

दैनिक भास्कर
22-May-2020
Page 2

नागदा सिटी

घर लौटने की खुशी बड़ों और बच्चों के चेहरों पर मुस्कुराहट से हो रही महसूस

माटीकीमहिमा

आधीरात को बुरानाबाद के 26 विद्यार्थी और 2 शिक्षक पहुंचे अपने गंतव्य

14 दिन विद्यालय में रहेंगे कोरेंटाइन



# रेस्क्यु-ऑपरेशन

अग्निबाण

सांसद की पहल पर बीते 2 दिनों में 2 राज्यों के मजदूर पहुंचे अपने गंतव्य तक

दैनिक भास्कर
24-Apr-2020
Page 3

नवोदय विद्यालय के फंसे विद्यार्थियों को निकालने का रास्ता हुआ साफ

बुरानाबाद के 26 विद्यार्थी और 2 शिक्षक आज पहुंचेंगे, गुजरात से हो चुके रवाना

सांसद फिरोजिया ने लिखा था मानव संसाधन मंत्री को पत्र

www.rajexpress.in

राजस्थान से लाए गए लोगों व उनके परिजनों के चेहरे खिले

गांव के ही शासकीय भवन में 14 दिन के लिए किया जाएगा क्वारंटाइन

सांसद, पूर्व विधायक की पहल पर जिले के 800 से अधिक लोग पहुंचे क्षेत्र में

बीते 2 दिनों में 2 राज्यों के 300 मजदूर पहुंचे अपने घरों तक

अगले दो दिनों में अब बिहार और झारखण्ड के मजदूरों को भेजेंगे

दैनिक भास्कर

नागदा सिटी

जैसलमेर, रामदेवरा में मजदूरी के लिए गए 600 मजदूरों को किया रेस्क्यू, 12 बसों में लौटे, देर रात तक पहुंचेंगे खाचरौद

लेकिन हर शहर हर प्रदेश व विदेशों से लाए गए लोगों के लिए अलग–अलग योजनाएं बनाकर काम करना पड़ा क्योंकि हर जगह की परिस्थितियां अलग थी जैसे प्रवासी मजदूरों के मामले में आंकड़ा भी साफ नहीं था लिहाजा क्षेत्र की हर ग्राम पंचायत में दूसरे शहरों प्रदेशों में जाकर काम करने वाले प्रवासियों का डाटा महज 3 दिनों में जुटाया गया और उसके बाद इन लोगों को सुरक्षित लाने का काम किया गया। इस दौरान इन्हें लाने के लिए संसाधन जुटाने के साथ ही बीमारी के भरे माहौल में इन्हें सुरक्षित स्थान पर रुकवाना खाना पानी व अन्य संसाधनों की व्यवस्था जुटाना लॉकडाउन के कारण कठिन था लेकिन हमने बेहतर प्रबंध कर लोगों को उनके परिवारों के पास पहुंचाने का काम किया इस तरह चिकित्सा शिक्षा के लिए किर्गिज़स्तान में ऐसे 200 से अधिक विद्यार्थियों को वापस लाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी व विदेश मंत्री बस जय शंकर जी से आग्रह किया और उसके बाद इन विद्यार्थियों को भारत लाने के लिए प्रयास तेज हुए और सभी विद्यार्थी अपने घरों तक सुरक्षित पहुंचाए।

"अमेरिका, मलेशिया, दुबई, रोहतक, साउथ अफ्रीका, लंदन मे अपने रिश्तेदारों के वहां फंसे लोगों को सकुशल वापस लाने का प्रयास कर उन्हें अपने घर तक भारत के अनुसार कोरोनावायरस में 15 दिन तक क्वारंटाइनकरा कर उन्हें अपने घर तक पहुंचाया।"

कुल मिलाकर लॉकडाउन काल में प्रवासियों को घर पहुंचाना उस काल के मुख्य कामों में एक था जिसे मेरी टीम ने बेहतरी के साथ पूरा किया।